ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 113-115

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

कथा साहित्य में राहुल का विशिष्ट अवदान

सत्य प्रकाश पाण्डेय

शोध अध्येता– श्री महत रामाश्रय दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भुरकुड़ा, गाजीपुर (उ0प्र0), भारत

Received- 22.11. 2019, Revised- 26.11.2019, Accepted - 30.11.2019 E-mail: satya4um@gmail.com

सारांश : *भारतीय साहित्य में प्रगतिशील आंदोलन का आरंभ जनता के साम्राज्यवाद और सामंतवाद विरोधी मुक्ति संघर्ष के स्वाभाविक विकास के रूप में हुआ। देश में स्वनतंत्रा आंदोलन और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सोवियत क्रांति ने प्रगतिशील साहित्य लेखन को बढ़ावा दिया। सामाजिक बदलाव की इस प्रक्रिया को सभी साहित्यकारों ने गहराई से महसूस किया और अपनी रचनाओं में जनता के जीवन, उनकी आशाओं–आकांक्षाओं को बड़ी संजीदगी के साथ प्रस्तुत किया। राहुल सांकृत्यायन ऐसे ही रचनाकारों में थे, जिन्होंने लेखकीय कर्म को सामाजिक परिवर्तन के साथ जोड़ दिया।*

सपष्ट दिशा एवं दृष्टि लिए, समता, सामाजिक, मानवतावादी स्वतंत्र चिंतन तथा आर्थिक न्याय के प्रबल पक्षधर राहुल सांकृत्यायन इस सदी के सबसे बड़े दार्शनिक चिंतक थे, इस कथन में जरा भी अतिश्योक्ति नहीं। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व इतना विशाल था की उसे किसी भी कैनवास में समेटना मुश्किल है।

कुंजी शब्द – भारतीय साहित्य, प्रगतिशील, आन्दोलन, साम्राज्यवाद, सामंतवाद, स्वाभाविक विकास, समता।

राहुल सांकृत्यायन का रचना–कर्म आधुनिक भारतीय लेखकों में सर्वाधिक व्यापक और विविधतापूर्ण कहा जा सकता है। उनसे मानव जीवन और संस्कृति का कोई भी जीवंत पक्ष अछूता नहीं है। धर्म, दर्शन, राजनीति, इतिहास, पुरातत्व, कहानी, उपन्यास, नाटक, आलोचना, साहित्येतिहास और संस्मरण जैसे क्षेत्रों में अपनी मौलिक छाप छोड़ी इतना सब होने के बावजूद भारतीय साहित्य में, विशेषकर हिन्दी साहित्य में उनका समुचित मूल्यांकन नहीं किया गया।

हिन्दी कथा क्षेत्र में राहुल सांकृत्यायन का पदार्पण चौथे दशक में हुआ। चौथे दशक को संक्रांति काल मानते हुए डा० नामवर सिंह का कहना है कि "भारतीय इतिहास का यह चौथा दशक अनेक दृष्टियों से संक्रांति काल के रूप में स्मरण किया जाता है। स्वतंत्रता संग्राम ने इस दौर में एक नया मोड़ लिया। राजनीति में यह युग वामपंथी रुझानों की शुरुआत का द्योतक है, बौद्धिक वातावरण मार्क्स तथा फ्रायड के विचारों से आंदोलित दिखाई पड़ता है। उस काल की पत्र–पत्रिकाओं तथा साहित्यिक कृतियों से नैतिक मूल्यों और मान्यताओं की गहरी कशमकश का एहसास होता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि कहानी इस वातावरण से अप्रभावित नहीं रह सकती थी। चौथे दशक के इन तीन लेखकों ने इस क्रम की मानसिक उथल–पुथल के एक न एक पहलू को कहानी के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास किया।

इसी समय राहुल सांकृत्यायन का आगमन भी हिन्दी कथा–क्षेत्र में हुआ। अपनी रचनाओं में उन्होंने जीवन के साथ–साथ इतिहास की गतिशीलता तथा समाज की विकास–प्रक्रिया को भी रेखांकित किया। परिणामतः उनकी कहानियाँ तत्कालीन मानसिक उथल–पुथल के किसी पहलू विशेष को व्यक्त ही नहीं करतीं बल्कि इतिहास का पात्रों और घटनाओं के साथ प्रामाणिक दस्तावेज प्रस्तुत करती हैं। इतिहास की मुख्य धारा से जुड़कर उनकी कहानियाँ समाज में घटने वाली सारी परिस्थितियों का यथार्थवादी चित्रण करने का भरसक प्रयास किया है।

राहुल सांकृत्यायन के सम्पूर्ण लेखन का केंद्र मनुष्य द्वारा निर्मित वास्तविक परिस्थितियों के साथ मनुष्य का संघर्ष है और इस संकट का कारण वे दार्शनिक नहीं बल्कि वास्तविक कारण है। इतना ही नहीं वे इस संकट का शिकार शोषित तथा उत्पीड़ित गरीब जनता को मानते हैं। जब तक मनुष्य आर्थिक, सामाजिक, तथा राजनीतिक प्रणाली को पूरी तरह से नहीं बदलता, शोषण–मुक्त समाज की स्थापना नहीं करता तब तक वह शोषण का शिकार बना रहेगा। इसलिए मनुष्य की सामाजिक–राजनीतिक दासता, अलगाव और अत्याचार से मुक्ति के लिए ही नहीं, मनुष्य की आत्मिक या मानसिक मुक्ति के लिए भी सामाजिक ढांचे को बदलना जरूरी है।

राहुल सांकृत्यायन के कथा साहित्य में दृष्टि की अस्पष्टता के साथ–साथ अराजकता की भी कमी है। वे निराशावादी साहित्यकार नहीं है बल्कि सर्वहारा वर्ग के प्रति सहानुभूति प्रकट करने वाला उच्च कोटी के साहित्यकार हैं जिनमें मानवीय संवेदनाएं कूट–कूटकर भरी हुई हैं। इसीलिए इनकी साहित्यिक रचनाओं को पढ़कर पाठक न केवल अपने दुखों की दुनियाँ के साथ ही साक्षात्कार करता है बल्कि उनके कारणों की भी जानकारी प्राप्त कर व्यवस्था के विरुद्ध समाधान भी देख पाता है।

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

राहुल सांकृत्यायन के औपन्यासिक कृतित्व उपन्यास साहित्य की नवीनतम विधाओं में से एक है। इस विधा में सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन की जटिलताओं को अभिव्यक्त करने की पूर्ण क्षमता है। इतिहास के प्रवाह को इसमें व्यक्त किया जा सकता है और आधुनिक जीवन के द्वंद्व, विस्तार और गति को इसके माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है, इसीलिए उपन्यास को आधुनिक युग का महाकाव्य भी कहा जाता है।

हिन्दी उपन्यास साहित्य को समृद्ध बनाने में राहुल सांकृत्यायन का महत्वपूर्ण योगदान है। उनके उपन्यासों में सामाजिक और एतिहासिक कथावस्तु का विश्लेषण है। उनके उपन्यासों में जीवन की विविध घटनाओं, मनःस्थितियों और व्यक्ति तथा समाज के सुख–दुःख के विस्तृत विवेचन मिलते है। उपन्यास विसंगतियों से जूझते हुए समाधान की नित नयी दिशा तलाशते है।

राहुल एक ऐसे साहित्यकार थे जो साहित्य को सामाजिक बदलाव के साथ जोड़ कर देखते थे। इसलिए उनकी कहानियों और उपन्यासों में गरीबी का दुःख दर्द अभिव्यक्त होता है। राहुल के उपन्यासों और कहानियों में सृजनात्मक प्रतिभा है। साहित्य को सोद्देश्य बनाते हुए उन्हें इस वर्ग–संघर्ष से भी जोड़ा है।

राहुल सांकृत्यायन की यह मान्यता है की किसी भी साहित्यिक कृति का उद्देश्य केवल मनोरंजन करना नहीं है, बल्कि जीवन की व्याख्या करना भी है। कहानीकार कहानी के माध्यम से जीवन की व्याख्या करता है। अतः उन्होंने अपने कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से अपनी अंतरदृष्टि और विशिष्ट उद्देश्य व्यक्त हुआ है। राहुल ऐसे रचनाकार हैं जिनकी जिंदगी तथा रचनायें दो अलग किस्म की बातें नहीं है। उनकी कहानियाँ मानव समाज के विकास में हुए संघर्षों की एक तथ्यात्मक तस्वीर पेश करती हैं तथा एक बेहतर दुनियाँ के निर्माण की ओर प्रेरित करती हैं। राहुल ऐसे लेखक हैं जिनका दृढ़ विश्वास मानव और मानवता की गतिशीलता में, उसके निरंतर विकास में है।

राहुल अपनी कहानियों में मानव जीवन की व्याख्या के लिए वैज्ञानिक, ऐतिहासिक दृष्टि अपनाते हैं। वे रूढ़िग्रस्त धर्म को समाज के लिए घातक और अहितकर मानतें हैं उत्पादन–संघर्ष, वर्ग–संघर्ष तथा वैज्ञानिक अनुसंधान द्वारा मनुष्य ने तथ्यों को जितना समझा है, उसके वास्तविक ज्ञान की मात्रा उतनी ही बढ़ती गयी।

राहुल के कथा की विशिष्टता– कथा साहित्य के क्षेत्र में राहुल की महत्वपूर्ण उपलब्धि वस्तु तथा विचारधारा की सम्पन्नता से संबन्धित है। उनकी सार्थकता भी इसी में है की उन्होंने साहित्य की सोद्देश्यता पर बल देते हुए अपने आपको यथार्थवादी साहित्यकार स्वीकार किया है ।

राहुल संवेदनशील , सजग तथा प्रबुद्ध मस्तिष्क के मालिक थे। उनके पास सामाजिक जीवन को देखने की पैनी और गहरी दृष्टि तथा जगत और जीवन के अनुभवों का अपार भंडार था। राहुल की कहानियों का वस्तुगत वैशिष्ट्य समाज की शोषित, पीड़ित तथा अति पिछड़े वर्ग के उत्थान से जुड़ा हुआ है। 'वोल्गा से गंगा' कहानी में उन्होंने कहा है की .पूंजीवादी, सामंतवादी तथा साम्राज्यवादी वर्ग के लोगों ने अपनी सुख सुविधा जुटाने के लिए ही हजारों–लाखों श्रमिकों का गला घोट दिया, मानव से पशु बना दिया, दास–प्रथा आरंभ किया और अंततः पशुओं की भांति उनके क्रय–विक्रय का घिनौना कृत्य किया जाने लगा। किसी भी साहित्यकार द्वारा उठाए गए प्रश्न और समस्याओं का विवेचन तथा विश्लेषण उस साहित्यकार की वैचारिक पृष्ठभूमि को आधार प्रदान करते है।

राहुल ने पश्चिमी कथा–साहित्य में मौजूद इतिहास और उपन्यास के संबंध को न केवल हिन्दी कथा साहित्य के साथ मिलाया वरन उसे ऐतिहासिक संघर्षो की अभिव्यक्ति प्रदान की।

मानव के विकास क्रम में कथा साहित्य की विशिष्टता– राहुल ने मानव समाज के विकास और चेतना को कथा साहित्य का केंद्र बनाकर अपनी लेखनी में प्रस्तुतिकरण का एक नवीन तथा बिल्कुल एक अलग रास्ता चुना। ऐसा करना एक रचनाकार के लिए काफी चुनौतीपूर्ण कार्य है पर राहुल इन चुनौतियों को स्वीकारते हुए मानव विकास की ऐतिहासिक प्रक्रिया को साधने का प्रयास किया। भदंत आनंद कौशल्यायन ने एक महराष्ट्रीयन विद्वान जो विश्व साहित्य से परिचय रखते हैं उन्होने कहा है कि किसी भारतीय भाषा में इस हिन्दी पुस्तक के समान कोई ग्रंथ नहीं।

राहुल मजदूरों किसानों से सच्चा प्रेम करते थे वे उनके हक की अनिवार्यता तथा उनके जीवन के अस्तित्व तथा परेशानियों के बुनियादी कारणों की खोज और पहचान करते हुए, उनके अस्तित्व के लिए खतरनाक सामाजिक – राजनीतिक तथा सांस्कृतिक शक्तियों, विचारों और मूल्यों के असली रूप का उद्घाटन कथा माध्यम से किया है। राहुल ने लिखा है कि ' खेतिहर मजदूरों को यह ख्याल रखना चाहिए की उनकी आर्थिक मुक्ति साम्यवाद से ही हो सकती है और जो क्रांति आज शुरू हुई है वह साम्यवाद पर ही ले जाकर रहेगी। उसके सिवा भले दिनों को दिखने वाला कोई दूसरा रास्ता नहीं है।"

राहुल का यथार्थवाद पाश्चात्य साहित्यकारों के यथार्थवाद से बिल्कुल भिन्न है लेकिन प्रेमचंद के साहित्य

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

से बहुत कुछ समानता रखता है, जो एक नया आयाम है। यूरोप तथा पश्चिमी देशों के आलोचनात्मक यथार्थ के लेखकों से राहुल की रचनाशीलता के अंतर का उनकी वर्ग दृष्टि और विचारधारात्मक स्थिति से गहरा संबंध है इसीलिए उनकी रचना का स्वरूप तथा प्रयोजन दोनों भिन्न है। राहुल समकालीन हिन्दी कथाकारों की तरह समाज के तटस्थ आलोचक नहीं हैं। शोषित जनता के पक्षधर लेखक हैं।

जिस प्रकार प्रेमचंद यथार्थवादी आदर्शवाद के परिचायक हैं उसी प्रकार राहुल सांकृत्यायन समाजवादी यथार्थवाद के संवाहक थे। उन्होंने अपनी रचनाओं में समाजवादी दृष्टि से यथार्थ चित्रण किया।

राहुल के द्वारा हिन्दी कहानी का रूप बदला। 'सतमी के बच्चे', 'वोल्गा से गंगा', 'बहुरंगी मधुपुरी', तथा 'कनैला की कथा' तक का रचनात्मक संघर्ष और साधना से राहुल ने हिन्दी कहानी में एक नए ऐतिहासिक यथार्थवादी परंपरा का महान निर्माण कार्य किया। उसके आधार पर भारतीय कथा–साहित्य को एक वैज्ञानिक ऐतिहासिक परम्परा के रूप में विकसित किया जा सकता है।

ऐतिहासिक दृष्टि और उपन्यास साहित्य– राहुल सांकृत्यायन ने 'जय यौधेय' 'सिंह सेनापति', दिवोदास' आदि कृतियों में ऐतिहासिक भौतिकवादी दृष्टिकोण से भारतीय इतिहास की व्याख्या की है। उन्होंने वर्ग संघर्ष और मानव समाज के एतिहासिक परिप्रेक्ष्य में गहरी समानता स्थापित करने की पूरजोर ईमानदार कोशिश की। आदिम समाज से लेकर वर्तमान युग तक की विकास यात्रा का विराट चित्रण अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है। 'दिवोदास' का वैदिक युग ही वह समय था और इसका चरमोत्कर्ष "जय यौधेय" और 'सिंह सेनापति' में होता है। 'सिंह सेनापति' और 'जय यौधेय' उपन्यासों में गणतन्त्र और राजतंत्र प्रणालियों की व्याख्या तो उन्होंने की ही है पर दोनों के बीच वैचारिक व सामरिक युद्धों का वर्णन किया है। लेखक ने गणतन्त्र प्रणाली को राजतंत्र के निरंकुश शासन से बेहतर माना है। लेखक के ही शब्दों में–'प्रजातंत्रों में ऐसे खानदानों का पता एथेंस, वैशाली, कपिलवस्तु सभी जगह मिलता है। साथ ही ये प्रजातन्त्र कुल, गोत्र व रक्त–सम्बन्धों पर आधारित थे। ऐसी स्थिति में उनमें व्यापक समायोजन का अभाव था।

राहुल सांकृत्यायन ने साहित्य की लोक–परंपरा को केंद्र में रखकर साहित्येतिहास पर नजर डाला है।

समग्र रूप में हम कह सकते हैं की राहुल सांकृत्यायन ने अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय देते हुए साहित्य के प्रत्येक विधाओं पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है तथा उस समय के साहित्यकारों से इतर समाज के हर मुद्दे पर बेबाक अंदाज के साथ साहित्य के लगभग सभी विषयों पर महत्वपूर्ण लेखन व चिंतन किया है। अतः उनके द्वारा संपादित व लिखित सारे साहित्यिक कार्यों को हम नवजागरण के प्रेरणास्त्रोत के रूप में स्वीकार कर सकते हैं। भारतीय इतिहास की विशद यात्रा के रूप में राहुल सांकृत्यायन ने इसकी श्रेष्ठ उपलब्धियों को कथा– माध्यम से प्रकट किया है। विश्लेषण की इस विशिष्टता ने उन्हें सम्पूर्ण भारतीय साहित्य में विशेष स्थान प्रदान कराया है। इतना ही नहीं हम उन्हें भारतीय साहित्य जगत का वह चमकता सितारा कह सकते हैं जिसने जीवन के अनुभवों से तथा अथक एवं जटिल घुमंतु प्रवृतियों द्वारा हिन्दी साहित्य जगत को एक नयी सोच एवं दिशा प्रदान की। वे परंपरागत साहित्यकारों के लीक से हटकर एक नयी सोच तथा इतिहास–परक रचना की शुरूआत की एवं साहित्य–जगत को समृद्ध किया।

राहुल संकृत्यायन साहित्य और इतिहास को समाज के आर्थिक राजनीतिक ढाँचे से जुड़ा पाते है। साहित्य का समाज से अलग कोई अस्तित्व नही है, इसलिए इसका इतिहास भी समाज के इतिहास से जुड़ा हुआ है। साहित्य इसी का एक विचारधारात्मक रूप है। इस प्रकार राहुल का सम्पूर्ण साहित्य, इतिहास की सामाजिक–सापेक्षता को अपनाया हुआ है। भारतीय अतिहा में प्रगतिशील परंपरा को उद्धत करने और कथा साहित्य में प्रचलित ऐतिहासिक किंवदंतियों को तथ्यपरक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने का कार्य हिन्दी ही नही सम्पूर्ण भारतीय साहित्य में राहुल की विशिष्टता है। जो लोग राहुल में वैचारिक विरोधाभास देखते है, वे इस मूल बात को नजरअंदाज कर जाते है कि जहाँ तक बहुजन हिताय, न्याय, समता, शोषणहीन समाज, अनीश्वरवाद, स्त्रियों की दशा व समाज में उनके स्थान, पूंजी पर व्यक्तिगत अधिकार आदि का प्रश्न है, राहुल में तनिक भी विरोधाभाष नही मिलेगा।

अनुभव और ज्ञान अर्जन से उनके विचार निरंतर विकसित हुए। उससे उनमें परिपक्वता आई, विरोधाभास नही। उनकी वैचारिक विकास यात्रा कभी पीछें नही गई, आगे की ओर बढ़ती रही। न उसमें भटकाव आया और न ही ठहराव। अतः हम कह सकते है कि राहुल संकृत्यायन अपने युग के महान साहित्यकार थे जिन्होने अपने साहित्य–लेखन से भारतीय समाज को एक नयी दिशा एवं दृष्टि प्रदान की।

*****